सिक्का बदल गया

खद्दर की चादर ओढ़े, हाथ में माला लिए शाहनी जब दरिया के किनारे पहुँची तो पौ फट रही थी। आसमान के परदे पर लालिमा फैलती जा रही थी । शाहनी ने कपड़े उतारकर एक ओर रखे और "श्री राम, श्री राम" करती पानी में हो ली । अंजलि भरकर सूर्य देवता को नमस्कार किया, अपनी उनींदी आँखों पर छींटे दिए और पानी से लिपट गई ।

चनाब का पानी आज भी पहले-सा ही सर्द था, लहरें लहरों को चूम रही थीं । दूर काश्मीर की पहाड़ियों से बर्फ पिघल रही थी । उछल-उछल आते पानी के भंवरों से टकराकर कगारे गिर रहे थे, लेकिन दूर-दूर तक बिछी रेत आज न जाने क्यों खामोश लगती थी । शाहनी ने कपड़े पहने, इधर-उधर देखा, कहीं किसी की परछाई तक न थी । पर नीचे रेत में अगणित पाँवों के निशान थे । वह कुछ सहम-सी उठी ।

आज इस प्रभात की मीठी नीरवता में न जाने क्यों कुछ भयावना-सा लग रहा है । वह पिछले पचास वर्षों से यहाँ नहाती आ रही है । कितना लंबा अरसा है । शाहनी सोचती है, एक दिन इसी दरिया के किनारे वह दुलहन बन कर उतरी थी । और आज.....आज शाहजी नहीं, उसका वह पढ़ा-लिखा लड़का नहीं, आज वह अकेली है, शाहजी की लंबी-चौड़ी हवेली में अकेली है । पर नहीं.....यह क्या सोच रही है वह सवेरे-सवेरे । अभी भी दुनियादारी से मन नहीं फिरा उसका । शाहनी ने लंबी साँस ली और "श्री राम, श्री राम" करती बाजरे के खेतों से होती घर की राह ली । कहीं-कहीं लिपे-पुते आँगनों से धुआँ उठ रहा था । टन....टन-बैलों की घंटियाँ बज उठती हैं । फिर भी.....कुछ बँधा-बँधा-सा लग रहा है । 'जम्मीवाला' कुआँ भी आज नहीं चल रहा । ये शाहजी की ही असामियाँ हैं । शाहनी ने नजर उठाई । यह मीलों फैले खेत अपने ही हैं । भरी-भराई नई फसल को देखकर शाहनी किसी अपनत्व के मोह में भीग गई । यह सब शाहजी की बरकतें हैं । दूर-दूर गाँवों तक फैली हुई जमीनें, जमीनों में कुएँ-सब अपने हैं । साल में तीन फसल, जमीन तो सोना उगलती है । शाहनी कुएँ की ओर बढ़ी, आवाज दी, "शेरे, शेरे, हसैना हसैना....।"

शेरा शाहनी का स्वर पहचानता है । वह न पहचानेगा ? अपनी माँ जैना के मरने के बाद वह शाहनी के पास ही पलकर बड़ा हुआ । अपने पास पड़ा गड़ासा 'शटाले' के ढेर के नीचे सरका दिया । हाथ में हुक्का पकड़कर बोला – "ऐहे-सैना-सैना.....।" शाहनी की आवाज उसे कैसे

हिला गई है । अभी तो वह सोच रहा था कि उस शाहनी की ऊँची हवेली की अँधेरी कोठरी में पड़ी सोने-चांदी की संदूकचियाँ उठाकर.....कि तभी "शेरे शेरे.....।" शेरा गुस्से से भर गया। किस पर निकाले अपना क्रोध ? शाहनी पर । चीखकर बोला – "ऐ मर गई एं.....रब्ब तैनू मौत दे....."

हसैना आटे वाली कनाली एक ओर रख, जल्दी-जल्दी बाहर निकल आई । "ऐ आई यां-क्यों छावेले (सुबह-सुबह) तड़पना एं ?"

अब तक शाहनी नजदीक पहुँच चुकी थी । शेरे की तेजी सुन चुकी थी । प्यार से बोली, "हसैना, यह वक्त लड़ने का है ? वह पागल है तो तू ही जिगरा कर लिया कर ।"

"जिगरा ।" हसैना ने मान भरे स्वर में कहा –"शाहनी, लड़का आखिर लड़का ही है । कभी शेरे से पूछा है कि मुँह अँधेरे ही क्यों गालियाँ बरसाईं हैं इसने ?" शाहनी ने लाड़ से हसैना की पीठ पर हाथ फेरा, हँसकर बोली - "पगली मुझे तो लड़के से बहू प्यारी है । शेरे...."

"हाँ शेरनी ।"

"मालूम होता है, रात को कुल्लूवाल के लोग आए हैं यहाँ ?" शाहनी ने गंभीर स्वर में कहा ।

शेरे ने जरा रुककर, घबराकर कहा - "नहीं-शाहनी....." शेरे के उत्तर की अनसुनी कर शाहनी जरा चिंतित स्वर में बोली, "जो कुछ भी हो रहा है, अच्छा नहीं । शेरे, आज शाहजी होते तो शायद कुछ बीच-बचाव करते । पर...." शाहनी कहते-कहते रुक गई । आज क्या हो रहा है। शाहनी को लगा जैसे जी भर-भर आ रहा है । शाहजी को बिछुड़े कई साल बीत गए, पर–पर आज कुछ पिघल रहा है–शायद पिछली स्मृतियाँ....आँसुओं को रोकने के प्रयत्न में उसने हसैना की ओर देखा और हल्के से हँस पड़ी । और शेरा सोच ही रहा है, क्या कह रही है शाहनी आज। आज शाहजी क्या, कोई भी कुछ नहीं कर सकता । यह होकर रहेगा–क्यों न हो? हमारे ही भाई-बंदों से सूद ले-लेकर शाहजी सोने की बोरियाँ तोला करते थे। प्रतिहिंसा की आग शेरे की आँखों में उतर आई । गड़ासे की याद हो आई । शाहनी की ओर देखा–नहीं-नहीं, शेरा इन पिछले दिनों में तीस-चालीस कत्ल कर चुका है । पर–पर वह ऐसा नीच नहीं.....सामने बैठी शाहनी नहीं, शाहनी के हाथ उसकी आंखों में तैर गए । वह सर्दियों की रातें–कभी-कभी शाहजी की डाँट खाकर वह हवेली में पड़ा रहता था । और फिर लालटेन की रोशनी में वह देखता है, शाहनी के ममता भरे हाथ दूध का कटोरा थामे हुए–"शेरे-शेरे, उठ, पी ले ।" शेरे ने शाहनी के झुर्रियाँ पड़े मुँह की ओर देखा तो शाहनी धीरे-धीरे मुस्करा रही थी । शेरा विचलित हो गया । आखिर शाहनी ने क्या बिगाड़ा है हमारा ? शाहजी की बात शाहजी के साथ गई, वह शाहनी को जरूर बचाएगा। लेकिन कल रात वाला मशवरा । वह कैसे मान गया था फिरोज की बात । "सब कुछ ठीक हो जाएगा–सामान बाँट लिया जाएगा ।"

"शाहनी चलो तुम्हें घर तक छोड़ आऊँ ।"

शाहनी चौंक पड़ी । देर–मेरे घर में मुझे देर । आँसुओं की भँवर में न जाने कहाँ से विद्रोह उमड़ पड़ा । मैं पुरखों के इस बड़े घर की रानी और यह मेरे ही अन्न पर पले हुए..... नहीं, यह सब कुछ नहीं । ठीक है–देर हो रही है । शाहनी के जैसे कानों में यही गूँज रहा है–देर हो रही है–पर नहीं, शाहनी रो-रोकर नहीं, शान से निकलेगी इस पुरखों के घर से, मान से लाँघेगी यह देहरी, जिस पर एक दिन वह रानी बनकर आ खड़ी हुई थी । अपने लड़खड़ाते कदमों को संभालकर शाहनी ने दुपट्टे से आँखें पोंछी और ड्योढ़ी से बाहर हो गई । बड़ी-बूढ़ियाँ रो पड़ीं । उनके सुख-दुख की साथिन आज इस घर से निकल पड़ी है । किसकी तुलना हो सकती थी इसके साथ । खुदा ने सब कुछ दिया था, मगर–मगर दिन बदले, वक्त बदले.....

शाहनी ने दुपट्टे से सिर ढाँपकर अपनी धुँधली आँखों में से हवेली को अंतिम बार देखा । शाहजी के मरने के बाद भी जिस कुल की अमानत को उसने सहेजकर रखा, आज वह उसे धोखा दे गई । शाहनी ने दोनों हाथ जोड़ लिए–यही अंतिम दर्शन था, यही अंतिम प्रणाम था । शाहनी की आँखें फिर कभी इस ऊँची हवेली को न देख पाएँगी । प्यार ने जोर मारा–सोचा, एक बार फिर घूम-फिर कर पूरा घर क्यों न देख आई मैं ? जी छोटा हो रहा है, पर जिनके सामने हमेशा बड़ी बनी रही है उनके सामने वह छोटी न होगी । इतना ही ठीक है । बस हो चुका । सिर झुकाया । ड्योढ़ी के आगे कुलवधू की आँखों से निकलकर कुछ बूँदें चू पड़ीं । शाहनी चल दी–ऊँचा-सा भवन पीछे खड़ा रह गया । दाऊद खाँ, शेरा, पटवारी, जैलदार, और छोटे-बड़े, बच्चे, बूढ़े मर्द-औरतें सब पीछे-पीछे ।

ट्रकें अब तक भर चुकी थीं । शाहनी अपने को खींच रही थी । गाँव वालों के गलों में जैसे धुआँ उठ रहा है । शेरे, खूनी शेरे का दिल टूट रहा है । दाऊद खाँ ने आगे बढ़कर ट्रक का दरवाजा खोला । शाहनी बढ़ी । इस्माइल ने आगे बढ़कर भारी आवाज से कहा–"शाहनी, कुछ कह जाओ । तुम्हारे मुँह से निकली सीस झूठी नहीं हो सकती ।" और अपने साफे से आँखों का पानी पोंछ लिया । शाहनी ने उठती हुई हिचकी को रोककर रुँधे-रुँधे गले से कहा, "रब्ब तुहानू सलामत रक्खे बच्चा, खुशियाँ बक्शे.....।"

वह छोटा-सा जन-समूह रो दिया । जरा भी दिल में मैल नहीं शाहनी के । और हम–हम शाहनी को नहीं रख सके । शेरे ने बढ़कर शाहनी के पाँव छुए । "शाहनी, कोई कुछ नहीं कर सका । राज भी पलट गया...." शाहनी ने काँपता हुआ हाथ शेरे के सिर पर रखा और रुक-रुककर कहा–"तैनू भाग जगण चन्ना" (ओ चाँद तेरे भाग जागें) । दाऊंद खाँ ने हाथ का संकेत किया । कुछ बड़ी-बूढ़ियाँ शाहनी के गले लगीं और ट्रक चल पड़ी ।

अन्न-जल उठ गया । वह हवेली, नई बैठक, ऊँचा चौबारा, बड़ा 'पसार' एक-एक करके घूम रहे हैं शाहनी की आँखों में । कुछ पता नहीं–ट्रक चल पड़ी है या वह स्वयं चल रही है । आँखें बरस रही हैं । दाऊद खाँ विचलित होकर देख रहा है इस बूढ़ी शाहनी को । कहाँ जाएगी अब वह ?

"शाहनी मन में मैल न लाना । कुछ कर सकते तो उठा न रखते । वक्त ही ऐसा है । राज पलट गया है..... सिक्का क्या बदलेगा ? वह तो मैं वहीं छोड़ आई ।.....?

और शाहजी की शाहनी की आँखें और भी गीली हो गईं ।

आस-पास के हरे-हरे खेतों से घिरे गाँवों में रात खून बरसा रही थी ।

शायद राज पलटा भी खा रहा था और – सिक्का बदल रहा था.....

□□□

अभ्यास

पाठ के साथ

1. शाहनी के मन में किस बात की पीड़ा है, फिर भी वह शेरा और हसैना के समक्ष हल्के से हँस पड़ती है । क्यों ?
2. शेरा कौन है और उसके साथ शाहनी का क्या संबंध है ?
3. शेरा के भीतर प्रतिहिंसा की आग क्यों है ?
4. शाहनी अपना घर छोड़ते हुए भी विरोध में एक स्वर नहीं निकाल पाती । ऐसा क्यों ?
5. शाहनी के हाथ शेरा की आँखों में क्यों तैर गए ?
6. शेरा की फिरोज के साथ क्या बात हुई थी ?
7. जबलपुर में आग क्यों लगाई गई थी ? धुआँ देख शाहनी क्यों चिंतित हो गई थी ?
8. दाऊद खाँ की कैसी स्मृतियाँ शाहनी से जुड़ी हुई हैं ?
9. भागोवाल मसीत के लिए शाहनी ने दाऊद खाँ को क्या दिया था ?
10. थानेदार दाऊद खाँ बार-बार शाहनी से नकद रखने का आग्रह करता है । तब भी शाहनी नकद नहीं रखती है । क्यों ?
11. दाऊद खाँ क्यों चाहता है कि शाहनी हवेली छोड़ते हुए कुछ साथ रख ले ।
12. दाऊद खाँ को शाहनी के पास खड़े देखकर शेरा ने क्यों कहा–"खाँ साहिब देर हो रही है ।"
13. शाहनी किसके सुख-दुख की साथिन थी ?
14. चलते समय इस्माइल ने शाहनी से क्या कहा ?
15. खूनी शेरे का दिल क्यों टूट रहा था ?
16. शाहनी शेरे को क्या आशीर्वाद देती है ?
17. शाहनी के जाने पर लोगों के मन में क्या अफसोस होता है ?